दक्षिण एशिया कि सुरक्षा में सार्क की भूमिका का अध्ययन

सुशील कुमार समुन
शोधार्थी,
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग ल0ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभगं ा

दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयागे सगं ठन राजनीतिक रूप स` बढ़ने में गतिशील रहा है। दक्षिण एशिया के देशों में जिस पक्र ार का अविश्वास आरै संदेह रहा है उसके मद्देनजर राष्ट्रों के इतर विभिन्न पात्रो ं स` मिल रही खतरनाक चुनौती स` निपटने के लिए क्षेत्रीय सुरक्षा तंत्र बनाना हमेशा समस्या ग्रस्त रहा है तथा एसे ा माना जाता है कि उस दिशा में काइे ठासे पय्र ास हो ही नहीं पाया ऐसी स्थिति मे ं यह कतइ आश्चर्यजनक नहीं है कि अपने निमार्ण ा के आरम्भिक वर्षों में सगं ठन के रूप में सार्क ने ऐसे निर्विवाद मदु ्दों का` महत्व दिया जिनस` आपस में अनावश्यक सदं`ह न बढ़ पाए। सार्क के गठन के लिए बांग्लादेश के राष्ट्रपति जिया उर रहमान ने पहल की थी। यह पहल उन्होंने 1980 के दशक में अफगानिस्तान संकट का` देखते हुए की थी। मई 1980 में दक्षिण एशियाइ देशों के पम्र खु ाे ं का` सबं ोधित करते हुए उन्होनं` दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयागे की जरूरत पर जारे दिया था। बागं लादेश ने दिसम्बर 1980 में दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयागे के लिए प्रस्ताव सर्कुलेट किया। क्षेत्रीय सहयागे के औचित्य की व्याख्या करते हुए इस पपे र में तर्क दिया गया है कि दक्षिण एशिया के देश तमाम समान मूल्य साझा करते है ं, जो कि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय आरै ऐतिहासिक परपं राओ ं स` गहरे तक जुड़ा हुआ है। दुनिया में कुछ विशिष्ट घटनाओं या राजनीतिक स्थितियों का` लके र नजरिया अलग हो सकता है, लेकिन ये मतभिन्नता उनके बीच काइे ऐसा खाइ नही पदै ा करते, जिस` पाटा न जा सके। सच ता` यह है कि क्षेत्रीय आधार पर सहयागे की शुरूआत सद्भावपण्ू ार् माहौल तैयार करने में सकारात्मक भूमिका निभा सकता है जिससे क्षेत्र के देश अपने साझा ससं ्कृति के समान मूल्यों के बारे में बहे तर अवधारणा बना सकते हैं। इस क्षेत्रीय व्यवस्था का` लेकर दुनिया में भी सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। चूँकि इस प्रस्ताव के अनुमोदन में भूटान, नेपाल, श्रीलकं ा और मालदीव ने तनिक भी देर नहीं लगाई, लेकिन विभिन्न कारणों स` शुरूआत में भारत और पाकिस्तान ने इसके प्रति काइे ज्यादा उत्साह नहीं दिखाया। भारत सरकार ने पस्र ्ताव का` सिद्धांत के तारै पर स्वीकार किया। हालांकि शुरूआत में भारत ने इस मामले में एहे तियात बरतने का पय्र ास किया, क्योंकि वह इस बात से आशंकित था कि प्रस्तावित क्षेत्रीय सगं ठन के माध्यम स` छोटे देश सामूहिक रूप स` भारत स` जरूरत स` ज्यादा अपक्षे ाा रखने लगेगं`। यही कारण था कि 1980 के दशक मे ं बहुपक्षवाद की बजाय द्विपक्षवाद पर जारे था। सार्क सगं ठन के शुरूआती पाचं साल में विदेश सचिव स्तर पर विचारों का आदान प्रदान दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयागे के व्यापक योजनाओं से जुड़ा हुआ आरै काफी सफल रहा। बांग्लादेश, मालदीव, पाकिस्तान, भूटान, भारत, नेपाल और श्रीलकं ा के विदेश मंत्रियों की पहली बैठक 1983 में नई
दिल्ली में हुई। विदेश मंत्रियों की बैठक का नतीजा यह रहा कि दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयागे की
घाषेणापत्र पर हस्ताक्षर हुआ। बीते वर्षों मे ं सार्क की स्थिति सार्क चार्टर 1985 में इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया है। इसके मतु ाबिक सगं ठन का उद्देश्य है आथिर्क वृद्धि का` बढ़ावा देना, क्षेत्र में सामाजिक पग्र ति और सासं ्कृतिक विकास का` बढ़ावा देना, ताकि सभी का` अपनी पण्ू ार् क्षमताओं आरै उचित प्रतिष्ठा के साथ जीने का अव सर मिले। सार्क ने सहयागे के लिए व्यावहारिक नजरिया अपनाया। इसमें सहयागे के उन क्षेत्रो ं का` चुना गया, जिसमं` राजनीतिक हस्तक्षेप कम स` कम हो। हालांकि आथिर्क विकास आरै सामूहिक आत्मनिभर्र ता का उल्लेख चार्टर के लक्ष्य आरै उद्देश्य में ही किया गया है। लेकिन व्यवहार में आथिर्क
क्षेत्र में सहयागे को सबस` बाद में अमल में लाया गया। सार्क का छठवा ं शिखर सम्मले न दिसबं र 1991

में काले बं ाे में हुआ था। इसमे ं अंतरसरकारी

समहू (आइर्ज ीजी) स्थापित करने की सहमति दी गई, ताकि दक्षिण एशिया में व्यापार उदारीकरण के लक्ष्य का` पप्र ्त करने के लिए सांस्थानिक फ्रेमवक्र पर समझौता हो सके। आईजीजी में समझौते का मसौदा शामिल किया

गया। सार्क प्रिफेशियल टेंडिंग एग्रीमेन्ट के ढांचागत समझौते पर ढाका में 1993 में सातवां सार्क शिखर सम्मेलन हुआ था। सदस्य देशों में व्यापार का` विस्तार देने में यह पहला बड़ा कदम था। समझातै` पर सभी देशों की सहमति और मंजूरी के बाद 1995 में यह समझौता अमल मे ं लाया गया। सार्क गठन के पहल` दशक के अन्त में इसका महत्व भी उभर कर सामने आया। इसके बाद सार्क सहयागे की शुरूआत कारे क्षेत्र में भी हुई। साप्टा (एसएपीटीए) के गठन में कइ ं तथ्यों का अहम यागे दान रहा। शीत युद्ध की समाप्ति आरै नेपाल, बा ंग्लादेश और पाकिस्तान मे ं लाके तंत्र के आगमन के साथ ही सहयागे मे ं ज्यादा खुलपे न का एक नया राजनीतिक दौर शुरू हुआ। सार्क के क्षेत्रीय एजेडं` का` तय करने मे ं वश्ै वीकरण तथा अन्तर्राष्टीय व्यापारिक समझौतों की बहुत विस्तृत भूमिका रही है। साल 1988 में सार्क ने आतंकवाद पर घोषणा का अनुमोदन किया। इसका मकसद आतंकवाद के मुद्दे से निपटना था। ढाका मे ं हुए पहल` शिखर सम्मले न में आतंकवाद के मुद्दे पर चचा ं हुई और क्षेत्र के देशों ने आतंकवाद पर घोषणा तैयार की। इसके बावजूद आतंकवादियों की परिभाषा तय करने में मतभदे के कारण यह पहल निमर्ल रही। इससे बुनियादी पश्न पैदा हुआ। पड़ोसी देशों द्वारा समथिर्त विभिन्न अलगाववादी आन्दाले नो ं के कारण भी इस मदु ्दे से गहराइ ं से निपटने मे ं

समस्या पशे ा आई। साल 1988 में आतंकवाद सबं ंी घोषणा में यह स्पष्ट नीति बनाइ ं गई कि पत्यपर्ण ा की प्रार्थन ा किए जाने पर क्या रूख अपनाया जाएगा।

यहां यह पश्न उठता है– सामूहिक खतर` आरै आतंकवादी हिंसा जिनमें बड` पमै ाने पर नागरिक मार` जाते है के बावजूद सदस्य देश आपस में सहयागे करने से झिझकते क्यों है? इसका अथ ं यह नहीं है कि लघु युद्ध लड़ने के लिए आतंकवाद का` समर्थन देना आज भी राजनीतिक आजै ार बना हुआ है? सदस्य देशों के बीच साथर्क सहयागे के विरूद्ध दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी समस्या आपसी सदं`ेह है और इसका सबसे अधिक इजहार आरंभिक वर्षों में सार्क के गठन के प्रति भारत और पाकिस्तान के रूख स` हुआ था। सार्क के गठन के बाद भी अधिकतर देशो ं ने सगं ठन का प्रयागे अपने निजी विदेश नीति सबं ंी हितों की पूर्ति के लिए करने का पय्र ास किया था। बजाए इसके कि व` साझा लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अपनी ऊजा ं लगाए ं और पय्र ास करें। साझा खतरों के अभाव तथा एक दूसर` को ही खतरा मानने से मतभदे और गहरा गए। शीतयुद्ध की राजनीतिक स` भी अविश्वास बढ़ा। सोवियत सघं ा के ढहने के बाद दक्षिण एशियाइ ं देशों के लिए आथिर्क सहयागे मूलमंत्र बन गया। सार्क के लिए सामाजिक आर्थिक सरु क्षा लबं` समय तक पय्र ख्ु ा चिंता बनी रही। इसके बावजूद यह चिंता राजनैतिक औजार ही सिद्ध हुई है। क्योंकि आथिर्क सहयागे तथा अंतर क्षेत्रीय व्यापार ऋण लगभग 5 प्रतिशत पर ही कायम है। गैर देशीय पात्रो ं स` बढ़ता खतरा सदस्य देशो ं के लिए 1990 के दशक के आरम्भ में चिंता का पय्र ख्ु ा कारण बन गया था। पड़ासे ी देशों में विद्राहे ी समूहों का` मिल रहे गुप–चुप समर्थन स` सार्क का माहौल गरमा गया था। दक्षिण एशियाइ ं देशों के बीच पहल` स` मौजूद संदेह आरक्षित सीमाओं, नस्लीय घसु पैठ, सैन्य विषमता आदि के कारण और बढ़ गया था। अनेक बार ता` सालाना शिखर बैठक का आयाजे न भी मुश्किल हो गया था इससे सहयागे पभ्ावित हुआ आरै सदस्य देश अपने विकास में बाधक बड़` मदु ्दों का` हल नहीं कर पाए। आज परमाणु हथियार जैस` मदु ्दे ने दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सुरक्षा का` एक नया आयाम देना शुरू किया है। सार्क ने सहयागे के प्रति क्रमिकवादी रूख अपनाया आरै जानबझू कर द्विपक्षीय आरै विवादास्पद मदु ्दों का` एसोसिएशन के दायर` स` बाहर रखा ताकि पग्र ति की राह मे ं काइ ं बांधा नहीं आए। हालाकि इन बैठकों के साथ ही क्षेत्रीय नेताओं ने हमेशा द्विपक्षीय वार्ताओं के लिए समय निकाल लिया आरै उसका सकारात्मक परिणाम भी उन्हे ं मिला। हालाकि सार्क अपने औपचारिक एजेंडे स ` इतर राजनीतिक पक्र ृति का` कभी नहीं छोड. पाया है। सभी सार्क शिखर सम्मले न में ऐसे माकै` पर देशों ने नेताओं के बीच द्विपक्षीय बैठके ं होती रही है। मंत्रियों, विदेश सचिवों की भी बैठक राजनीतिक स्तर पर द्विपक्षीय राजनीतिक मदु ्दों का` लके र होती रही है। इन बठै कों में तमाम महत्वपणू ं फैसले भी लिए जा चुके है। आज सुरक्षा का मामला सर्वापे रि है। इससे निपटना किसी एक देश के अकेले के बस का नहीं हैं चाहे वह मादक पदार्थों की तस्करी का मामला हो ं या फिर आतंकवाद, सभी मैं क्षेत्रीय सहयागे की जरूरत होती है। दक्षिण एशिया मे ं सदस्य देशों में समझौतों के सही ढंग स` लागू न हो पाने के कारण स्थिति गंभीर होती जा रही है। जब कि

10वें सार्क शिखर सम्मले न में आतंकवाद स` बरु ी तरह पभ्रावित क्षेत्र का` देखते हुए नेताओ ं ने 1987 में आतंकवाद पर अंकुश के लिए हुए समझौते का` तत्काल लागू करने पर जारे दिया था। बावजूद इसके सदस्य देश इसका` लके र कुछ अधिक कर नहीं पाए, इससे पता चलता है कि आतंकवाद स` पभ्रावित होने के बावजूद सदस्य देश इसके प्रति कितना गंभीर है। दूसरा आतंकवाद को परिभाषा का` लके र भी सदस्य देशों में आम सहमति नहीं है। लेकिन पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद को खाद पानी देने के मुद्दे पर आम सहमति हो सकमती है। बावजूद इसके काइ र् भी देश आगे नहीं बढ़ना चाहता है। सार्क को तेजी स` आगे बढ़ाने के लिए एक राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत है, तभी इसका` चुनौतियों स` निपटा जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि समय समय पर किए गए समझातै ो ं को सफलतापवू र्क लागू किया जाए। सार्क एक एसे ा मंच है जा` सदस्य देशों का` अपने विवाद निपटाने का मंच पद्र ान करता है। सार्क चार्टर में क्षेत्र की सरु क्षा का` लके र काफी कुछ बाते कही गइ र् हैं इसकी पस्र तावना में ही कहा गया है कि क्षत्रे में शांति, स्थिरता, साहै ार्द और प्रगति का` बढ़ावा देने का इच्छुक। चार्टर में आगे कहा गया है कि सदस्य देशो ं का` सपं भ्रुता, समानता, क्षेत्रीय अखंडता, राष्टीय स्वतंत्रता के सिद्धान्तों की रक्षा करनी होगी। साथ ही अन्य देशों के आंतरिक मामलो ं मे ं हस्तक्षेप न करने आरै बल के उपयागे न करने की भी बात कही गइ र् है। दक्षिण एशिया क्षेत्र की स्थिति काफी कुछ भारत की स्थिति पर भी निभर्र करती है, चाहे वह सन्य मामला हो या आथिर्क या फिर राज्य क्षेत्रीय। भारत आरै उसके छाटे ` पड़ोसिया` ं की सरु क्षा अवधारणाएं अलग–अलग है।

छोटे देश बाहरी शक्तियों स` गठजाडे. कर भारत का` सतं ुलित करना चाहते हैं। इस तरह बाहरी शक्तियों का` क्षेत्र स` बाहर रखना मुश्किल होता जा रहा है। जहां तक भारत की बात है तो इसकी सरु क्षा नीति पर` दक्षिण एशिया का` एक सामरिक क्षेत्र मानकर है। दक्षिण एउशिया में प्रत्येक घरले ू समस्या अंतर राज्य समस्या बन जाती है। सभी क्षेत्रीय या द्विपक्षीय सहयागे का प्रयास घरले ू राजनीति में उलझ जाती है।

क्या साझा सरु क्षा सिद्धान्त तय किया जा सकता है? दाते रफा संबंधों की स्थिति का` देखते हुए साझा सरु क्षा सिद्धांत तय कर पाना कठिन होगा। इसके बावजूद आतंकवाद के मुद्दे पर देशों के बीच पिछले कुछ अरस` में दृढ़ दिखाइ र् दी है। पाकिस्तान में हाल के कुछ साल में आत्मघाती बम हमलो ं में बहुत तेजी आई है जिससे कभी–कभी तो राजनीतिक अस्थिरता का खतरा पैदा हो चुका है। इसी पक्र ार अफगानिस्तान भी आतंक से युद्ध के तहत आतंकवाद स` लड़ रहा है। नेपाल का` हिंसक वारदातो ं में लगे विभिन्न समहू ों ने चुनातै ी दी है आरै सीमापार शरण ल` ली हैं बाग ं लादेश और श्रीलकं ा भी ऐसी ही चुनौतियों स` रूबरू है। राष्टीय सरु क्षा के लिए यही गैर सरकारी पात्र सबसे बड़ा खतरा बन गए है। यही चुनौती देशो ं के बीच दोतरफा मदु ्दों के इतर सहयागे का` आरै गहरा करने का जबरदस्त अवसर भी है। यदि इस कवायद में सफल होना है तो साझा सरु क्षा सिद्धांत तैयार करना ही होगा। उपमहाद्वीप मे ं स्थिरता आरै अस्थिरता दरअसल देश सापेक्ष नहीं रह गई है। इसके सीमापार तक फैल जाने की आशंका बन गइ र् है, जिससे सघं र्ष बढ़ सकता है। सुरक्षा के इस पैमाने का आधार साझा सुरक्षा सिद्धांत होना चाहिए। हम ये नहीं कह सकते हैं कि सार्क अभी जिस रूप में हमारे सामने है उसका काइ र् उपयागे ही नहीं है। सार्क ने एक क्षेत्रीय सगं ठन के रूप में अपनी उपयोगिता साबित की है। इसने विभिन्न नजरिये के देशों को एक साथ खड़ा किया हैं सार्क का` केवल विवाद निपटारे के तंत्र के रूप में ही विकसित नहीं किया गया था, बल्कि चार्टर के रूप में हमारे द्विक्षीय आरै विवादास्पद मुद्दों का` चचा र् के लिए इसका उपयागे होना था अब जबकि भारत का` सार्क का` पनु : सक्रिय करने की जिम्मदे ारी लेनी चाहिए, इसी तरह की प्रतिबद्धता और गंभीरता सार्क के अन्य देशों को भी दिखानी होगी। वसै ` उपक्षेत्रीय सहयागे क्षेत्र की एकता का एक माध्यम हो सकता है, लेकिन देश इसके लिए सहयागे नहीं कर रहे हैं पधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी ने काठमाडं ू में सार्क के 18वें शिखर सम्मले न में नेताओं से कहा भी था कि सबं धं तो विकसित होगा, चाहे व सार्क के भीतर हो या बाहर या फिर सार्क के सभी देश साथ हो ं अथवा इसके कुछ सदस्य। अतः चुनौतियों के बावजूद सार्क के सहयागे के माध्यम स` क्षेत्रीय व्यापार, बुनियादी ढांचा, ऊर्जा, शिक्षा, हेल्थकेयर, आरै आतंकवाद भारत की दा` मख्ु य उद्देश्यों विकास आरै पड़ोस में स्थिरता के केन्द्र बिन्दु है।

References:-

1. Bharti Chhibber. Regional Security and Regional cooperation: A comparative Study of ASEAN and SAARC, New Delhi, 2004.

2. Chaudhary, Anasua Basu Ray. SAARC at crossroads: Fate of Regional Cooperation in South Asia, New Delhi: Samskriti, 2006, 247.

3. Pkattanaik, Smruti S. SAARC at Twenty- Five: An Incredible Idea Still in Its Infancy, Strategic analysis, 2010; 34(5):671-677.

4. Ahmar Moonis. The challenge of Confidence building in South Asia, Har Anand Publication, New Delhi, 2001.

5. Flore Keith. SAARC Puts India in a Corner, The Statesman, New Delhi, 1987.

6. Sudhakar E. SAARC: Origin, Growth & Future, gyan Publishing House New Delhi, 1994.